मानव विकास रिपोर्ट, 2009

का सारांश

बाधाओं पर विजयः
मानव गतिशीलता और विकास

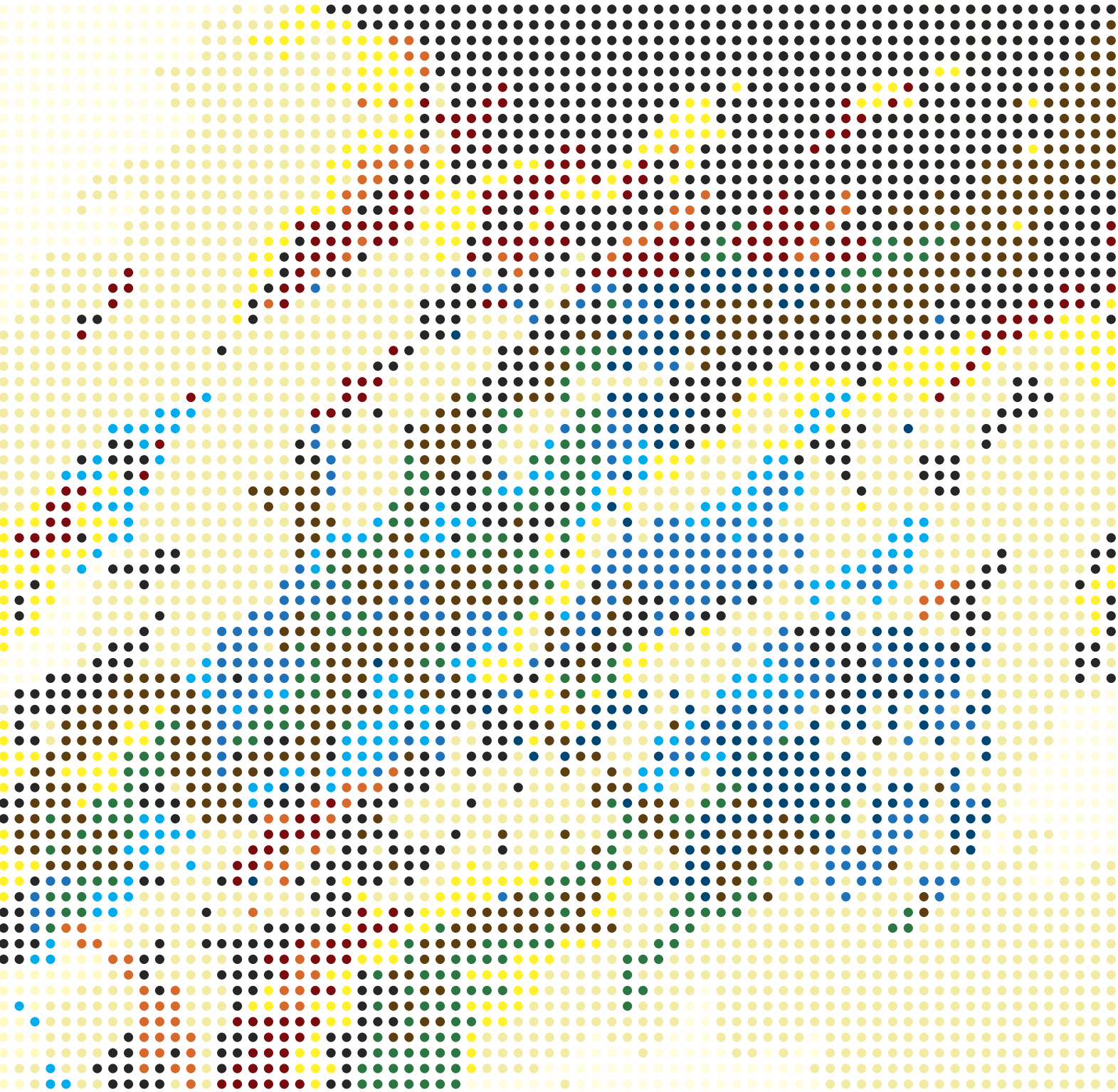

कापीराइट © 2009
संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) द्वारा
1 यूएन प्लाजा, न्यूयार्क, NY 10017, यूएसए

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी भाग पूर्व अनुमति के बिना पुनर्प्रकाशित, रिट्रीवल सिस्टम में या संचारित रूप में या इलैक्ट्रानिक, मैकेनिकल, पोटोकापीइंग, रिकार्डिंग आदि के रूप में भण्डारित नहीं किया जा सकता।

वर्जीनिया कलरक्राफ्ट द्वारा यूएसए में मुद्रित। कवर पृष्ठ 80# कोरस सिल्क कवर पर मुद्रित है जो कि 25 प्रतिशत उपभोक्ता–पश्चात कचरा है। पाठ के पृष्ठ वेजिटेबल–आधारित इंक्स के साथ 30 प्रतिशत डि–इंक्ड उपभोक्ता पश्चात रिसाइकल किये गये फाइवर, फॉरेस्ट स्टूवर्डशिप परिषद द्वारा प्रमाणित क्लोरीन मुक्त कागज पर मुद्रित किये गये हैं और इन्हें पर्यावरण–संगत प्रौद्योगिकी के माध्यम से तैयार किया गया है। कृपया श्रिंकरैपिंग को रिसाइकल करें।

Mixed Sources
Product group from well-managed forests, controlled sources and recycled wood or fiber
www.fsc.org Cert no. SW-COC-002339
© 1996 Forest Stewardship Council
FSC
25%

संपादन और ले आउट – ग्रीन इंक
डिजाइन – जेडएजीओ

डिसक्लेमर :

इस रिपोर्ट का विश्लेषण और नीति सिफारिशें जरूरी नहीं कि यूएनडीपी, उसके कार्यकारी बार्ड या उसके सदस्य राज्यों के विचारों को प्रतिबिंबित करें। रिपोर्ट यूएनडीपी द्वारा कमीशन किया गया एक स्वतंत्र प्रकाशन है। यह प्रतिष्ठित सलाहकारों और मानव विकास रिपोर्ट टीम के सहयोगी प्रयासों का परिणाम है। मानव विकास रिपोर्ट कार्यालय की निदेशिका, जेनी क्लुगमैन ने प्रयासों का नेतृत्व किया।

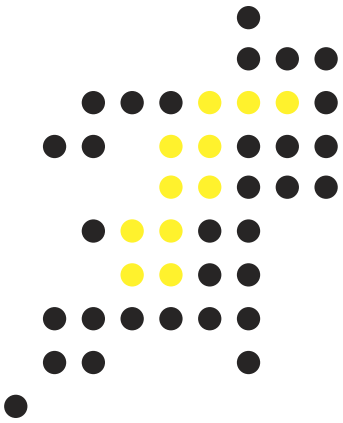

मानव विकास रिपोर्ट, 2009

सारांश

बाधाओं पर विजयः
मानव गतिशीलता और विकास

संयुक्त राष्ट्र
विकास
कार्यक्रम
(यूएनडीपी)
के लिए
प्रकाशित

मानव विकास रिपोर्ट 2009 का तैयारी–दल

निदेशक
जेनी क्लुगमैन

शोध
फैंसिस्को आर रोड्रिगुएज़ के नेतृत्व में गिनेटी अज़कोना, मैथ्यू कुमिन्स, रिकार्डो फुइंटेस निएवा, मामाये ग्रेब्रेतसदिक, वेइ हा, मेरिके क्लीमांस, इमैनुएल लेताउज़े, रोशनी मेनन, डिनाएल आर्टेगा, इसाबेल मेडाल्हो पेरेएरा, मार्क पर्सर और सिसिलिया उगाज़ (अक्तूबर 2008 तक उप निदेशक) द्वारा

सांख्यिकी
एलिसन केनेडी के नेतृत्व में लिलिआना करवाजाल, एमी गाये, श्रेयसी झा, पापा सेक और एंडर्यू थोर्नटन द्वारा

राष्ट्रीय एचडीआर और नेटवर्क
इवा जेस्पर्सन (उप निदेशक एचडीआरओ), मेरी एन म्वांगी, पाओला पेगलियानी और टिमोथी स्कॉट

संपर्क और संप्रेषण
मेरिसोल सेंजिनेस के नेतृत्व में वाइनी बोएल्ट, ज्यां–वेस हामेल, मलिसा हर्नांदेज, पेड्रो मैनुअल मोरेनो और यलांदा पोलो

प्राडक्शन, अनुवाद, बजट और प्रचालन, प्रशासन
कार्लोटा एइलो (प्राडक्शन समन्वयक), सरंतूया मेंद (प्रचालन प्रबंधक),
फे जुआरेज़ शानहान और आस्कर बर्नाल

मानव विकास रिपोर्ट 2009

पूर्ण रिपोर्ट की विषय–वस्तु

आमुख
आभार
संक्षिप्तियां

सिंहावलोकन

अध्याय 1

स्वतंत्रता और सचलताः गतिशीलता मानव विकास को किस प्रकार पोषित कर सकती है?

1.1 गतिशीलता संबंधी विषय
1.2 चुनाव और संदर्भः यह समझना कि लोग क्यों गतिशील होते हैं
1.3 विकास, स्वतंत्रता और मानव गतिशीलता
1.4 हम मेज पर क्या लाते हैं

अध्याय 2

गतिशील लोगः कौन कहां, कब और कैसे गतिशील होता है

2.1 आज की मानव सचलता
2.2 पीछे मुड़ कर देखना
  2.2.1 दीर्घकालिक दृष्टिकोण
  2.2.2 20वीं शताब्दी
2.3 नीतियां और सचलता
2.4 भविष्य की ओरः संकट और उसके पार
  2.4.1 आर्थिक संकट और उससे उबरने की संभावनाएं
  2.4.2 जनसांख्यिक रुझान
  2.4.3 पर्यावरण संबंधी कारक
2.5 निष्कर्ष

अध्याय 3

गतिशील लोगों की क्या स्थिति है

3.1 आय और आजीविकाएं
  3.1.1 सकल आय पर प्रभाव
  3.1.2 सचलता की वित्तीय लागत
3.2 स्वास्थ्य
3.3 शिक्षा
3.4 सशक्तीकरण, नागरिक अधिकार और भागीदारी
3.5 नकारात्मक चालकों के परिणामों को समझना
  3.5.1 जब असुरक्षा सचलता को चालित करती है
  3.5.2 विकास द्वारा प्रेरित विस्थापन
  3.5.3 अवैध मानव–सौदेबाजी
3.6 कुल प्रभाव
3.7 निष्कर्ष

अध्याय 4

मूल स्थान और गंतव्य स्थान के प्रभाव

4.1 मूल स्थान के प्रभाव
  4.1.1 पारिवारिक स्तर के प्रभाव
  4.1.2 समुदाय और राष्ट्रीय स्तर के आर्थिक प्रभाव
  4.1.3 सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव
  4.1.4 गतिशीलता और राष्ट्रीय विकास रणनीतियां
4.2 गंतव्य स्थान के प्रभाव
  4.2.1 सकल आर्थिक प्रभाव
  4.2.2 श्रम बाजार के प्रभाव
  4.2.3 तीव्र शहरीकरण
  4.2.4 राजस्व प्रभाव
  4.2.5 प्रवासन के बारे में सोच और सरोकार
4.3 निष्कर्ष

अध्याय 5

मानव विकास परिणामों को बढ़ाने वाली रणनीतियां

5.1 मुख्य पैकेज
  5.1.1 नियमित माध्यमों का उदारीकरण और सरलीकरण
  5.1.2 प्रवासियों के मूल अधिकारों को समझना
  5.1.3 गतिशीलता संबंधी लागतों में कमी लाना
  5.1.4 प्रवासियों और गंतव्य समुदायों के लिए परिणामों में सुधार लाना
  5.1.5 आंतरिक गतिशीलता से प्राप्त होने वाले सहायताकारी लाभ
  5.1.6 गतिशीलता को राष्ट्रीय विकास रणनीतियों का अभिन्न अंग बनाना
5.2 सुधार की राजनीतिक व्यवहार्यता
5.3 निष्कर्ष

टिप्पणियां
संदर्भ ग्रंथ सूची

सांख्यिकीय अनुलग्नक

तालिकाएं
पाठक मार्गदर्शिका
तकनीकी टिप्पणियां
सांख्यिकीय शब्दों और संकेतकों की परिभाषा
देश वर्गीकरण

बाधाओं पर विजयः मानव गतिशीलता और विकास

जुआन की स्थिति पर विचार करें। ग्रामीण मैक्सिको ने निर्धन परिवार में जन्मे जुआन का परिवार उसकी स्वास्थ्य देखरेख और शिक्षा का खर्च उठाने के लिए जूझ रहा था। बारह साल की उम्र में उसने परिवार की मदद करने के लिए विद्यालय छोड़ दिया। छह साल बाद जुआन अधिक मजदूरी और बेहतर अवसरों की तलाश में अपने चाचा के पास कनाडा चला गया। कनाडा में मैक्सिको की तुलना में जीवन–क्षमता 5 वर्ष अधिक है और आय तीन गुना है। कनाडा में जुआन का चयन अस्थायी काम के लिए हुआ, उसने वहीं रहने के अधिकार प्राप्त किये और एक उद्यमी बन गया। उसके उद्यम में कनाडा के स्थानीय लोग काम करते हैं। यह लाखों में से एक ऐसा मामला है जहां किसी को प्रवास करके नये अवसर और आजादियां प्राप्त हुई।

अब भाग्यवती के मामले पर विचार करें। निम्न जाति की यह महिला भारत के आंध्र प्रदेश राज्य की निवासी है। वह हर साल अपने बच्चों के साथ निर्माण स्थलों पर काम करने के लिए बंगलौर जाती है। उसकी दैनिक आमदनी 60 रु. (1.20 अमरीकी डालर) है। जब से वह घर से बाहर गई उसके बच्चे स्कूल नहीं जाते क्योंकि स्कूल निर्माण–स्थल से काफी दूर है और वे वहां की स्थानीय भाषा भी नहीं जानते। भाग्यवती को रिआयती दर पर खाद्य सामग्री नहीं मिलती और न ही उसे मतदान करने का अधिकार है क्योंकि वह अपने जिले से बाहर रहती है। लाखों–करोड़ों प्रवासियों की तरह उसके पास जीवन में सुधार लाने के थोड़े से अवसर हैं। उसे काम के मौकों की तलाश में दूसरे शहरों में जाना होगा।

हमारी दुनिया असमान है। देशों के बीच और देशों के भीतर मानव विकास असमानता वर्ष 1990 में अपने प्रथम प्रकाशन के बाद से मानव विकास रिपोर्ट (एचडीआर) का विषय रही है। इस वर्ष की रिपोर्ट में हम पहली बार प्रवास के विषय की छानबीन कर रहे हैं। विकासशील देशों में कई लोगों के लिए अपने घर या गांव से बाहर जाना सबसे अच्छा (और कभी–कभी एक मात्र) विकल्प होता है जो उनके जीवन में सुधार ला सकता है। इस तरह से मानव गतिशीलता व्यक्ति की आय, स्वास्थ्य एवं शिक्षा संभावनाओं को बढ़ाने में काफी असरकारी हो सकती है। किंतु इसका मूल्य इससे कहीं ज्यादा है। मानव स्वतंत्रता का एक मुख्य तत्व है जहां आप रहना चाहते हैं उसका निर्णय करने की स्वतंत्रता।

जब लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं तो वे अपने देश के भीतर या अंतर्राष्ट्रीय सरहदों के पार, आशा और अनिश्चितता की एक यात्रा पर निकलते हैं। अधिकतर लोग बेहतर अवसरों की तलाश में जाते हैं, इस आशा के साथ कि वे अपनी प्रतिभाओं और गंतव्य देश के संसाधनों को जोड़ कर स्वयं के लिए या अपने परिवार के लिए – जो अक्सर उनके साथ जाता है या उनके बाद जाता है – लाभ प्राप्त करेंगे। यदि वे सफल होते हैं तो उनकी पहलकदमी और प्रयासों से पीछे छूट गये लोगों को और उस समाज को जिसे उन्होंने अपना नया घर बनाया है, लाभ हो सकता है। लेकिन सभी सफल नहीं होते। अपने मित्रों और परिवार को पीछे छोड़कर आये प्रवासियों को अकेलेपन का सामना करना पड़ सकता है, वे उन नवागंतुकों से डरने और उनका विरोध करने वाले लोगों के बीच अवांछित महसूस कर सकते हैं, अपना रोजगार खो सकते हैं या बीमार पड़ सकते हैं और इस तरह समृद्ध होने के लिए आवश्यक सहायता सेवाएं प्राप्त नहीं कर पाते।

वर्ष 2009 की मानव विकास रिपोर्ट में यह छानबीन की गई है कि किस प्रकार मानव गतिशीलता के प्रति बेहतर नीतियां मानव विकास को आगे बढ़ा सकती हैं। इसमें अपनी सीमाओं के भीतर और उनके पार मानव गतिविधि पर प्रतिबंधों में कमी लाने हेतु सरकारों के लिए एक वस्तु–स्थिति को प्रस्तुत किया गया है ताकि मानव विकल्पों और स्वतंत्रताओं का विस्तार किया जा सके। यह ऐसे व्यावहारिक उपायों का पक्षपोषण करती है जो गंतव्य स्थान पर पहुंचने पर संभावनाओं में सुधार ला सकें जिससे गंतव्य स्थान के और मूल स्थान, दोनों के समुदायों को काफी लाभ होगा।

लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों जाते हैं?

प्रवासन पर विचार–विमर्श की शुरूआत आमतौर पर विकासशील देशों से यूरोप के समृद्ध देशों, उत्तरी अमेरिका और आस्ट्रेलिया में आबादी के प्रवाह के परिप्रेक्ष्य से की जाती है। फिर भी अधिकतर सचलता विकासशील और विकसित देशों के बीच नहीं होती। यह देशों के बीच भी नहीं होती। अधिसंख्यक लोग अपने ही देश के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं। एक पारंपरिक परिभाषा के उपयोग पर आधारित हमारे आकलन के अनुसार लगभग 74 करोड़ लोग आंतरिक प्रवासी होते हैं – यह संख्या अंतर्राष्ट्रीय रूप से प्रवास करने वालों की तुलना में चार गुनी है। जो लोग राष्ट्रीय सीमाओं के पार जाते हैं उनमें से केवल एक तिहाई से कुछ अधिक लोग ही विकासशील से विकसित देश में जाते हैं – इनकी संख्या 7 करोड़ से भी कम है। विश्व के 20 करोड़ अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों में से अधिकतर या तो एक विकासशील देश से दूसरे विकासशील देश में या फिर विकसित देशों के बीच प्रवास करते हैं (मानचित्र 1)।

अधिकतर प्रवासी – चाहे वे आंतरिक हों या अंतर्राष्ट्रीय– उच्चतर आयों, शिक्षा एवं स्वास्थ्य तक बेहतर पहुंच और अपने बच्चों के लिए बेहतर संभावनाओं के रूप में लाभ प्राप्त करते हैं (चित्र 1)। प्रवासियों के सर्वेक्षण से पता चलता है कि दूसरे स्थान पर जाने से, दिक्कतों के बावजूद, उनमें से अधिकतर आने गंतव्य स्थानों में खुश हैं। एक बार व्यवस्थित हो जाने के बाद प्रवासियों के यूनियनों या

चित्र 1 **निम्न एचडीआई वाले देशों से आये प्रवासियों के लिए विद्यालय शिक्षा के लाभ सबसे अधिक हैं**

मूल देश एचडीआई वर्ग, 2000 जनगणना या नवीनतम चक्र के हिसाब से मूल देश बनाम गंतव्य देश में कुल सकल नामांकन अनुपात

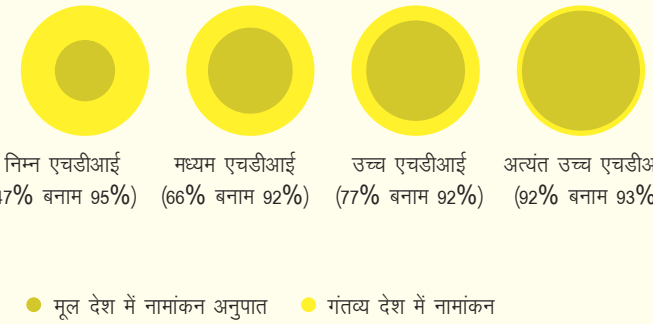

स्रोतः ओरटेगा (2009)

नोटः प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक शिक्षा सहित कुल भागीदारी

मानचित्र 1 अधिकतर गतिशीलता क्षेत्र के भीतर होती हैं
अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों का मूल और गंतव्य देश, लगभग–2000

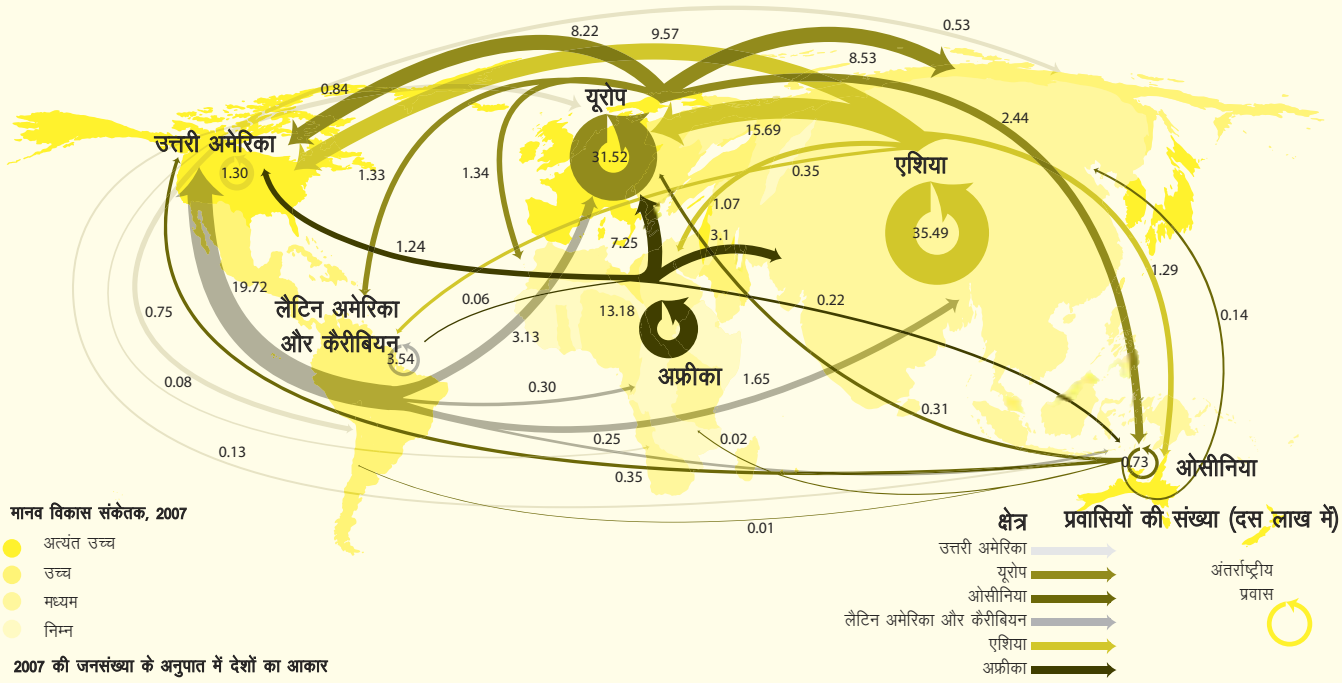

स्रोतः प्रवास डीआरसी (2007) डाटाबेस पर आधारित एचडीआर आकलनल

धार्मिक व अन्य समूहों में शामिल होने की संभावना स्थानीय निवासियों से अधिक होती है। फिर भी सचलता के लाभ असमान रूप से वितरित हैं। असुरक्षा और टकराव की वजह से विस्थापित लोगों को विशेष चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अनुमानतः एक करोड़ 40 लाख शरणार्थी अपने देशों से बाहर रहते हैं जो विश्व के प्रवासियों का 7 प्रतिशत हैं। वे अधिकतर उस देश के पास ही रहते हैं जहां से वे भागे थे। आम तौर पर वे तब तक शिविरों में रहते हैं जब तक उनके गृह देश की स्थितियां उनके लौटने लायक नहीं हो जातीं, पर लगभग 5 लाख लोग हर साल विकसित देशों की यात्रा करते हैं और वहां शरण प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इससे अधिक संख्या में लोग – लगभग 2 करोड़ 60 लाख लोग – आंतरिक रूप से विस्थापित हैं। उन्होंने सरहदें तो पार नहीं कीं, पर टकराव और प्राकृतिक विपदाओं से तहस–नहस देश में उन्हें विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। एक अन्य असुरक्षित समूह उन लोगों का है – विशेषकर युवा महिलाओं का – जिनका अवैध व्यापार किया जाता है। अक्सर बेहतर जीवन के वायदों के झांसे में आए इन लोग की गतिविधि अपनी इच्छा से नहीं होती, बल्कि बाध्यता की वजह से होती है और कभी–कभी उन्हें साथ ही हिंसा और यौन दुराचार का सामना करना पड़ता है।

किंतु सामान्य तौर पर देखें तो लोग अपनी इच्छा से ही बेहतर स्थानों में जाते हैं। तीन–चौथाई से अधिक प्रवासी अपने मूल देश से उच्चतर मानव विकास स्तर वाले देश में प्रवास करते हैं (चित्र 2)। फिर भी प्रवेश को बाधित करने वाली नीतियों और जाने के लिए अपने पास उपलब्ध संसाधनों, दोनों की वजह से उन्हें बाधाओं का सामना करना पड़ता है। निर्धन देशों के लोग सबसे कम गतिशील होते हैं। उदाहरण के लिए एक प्रतिशत से भी कम अमरीकी यूरोप जाते हैं। बेशक, इतिहास और समकालीन साक्ष्य यह सुझाते हैं कि विकास और प्रवास का चोली–दामन का साथ है। उच्च मानव विकास वाले देशों की 8 प्रतिशत से अधिक की माध्यिक प्रवास दर की तुलना में निम्न मानव विकास वाले देशों में माध्यिक प्रवास दर 4 प्रतिशत से कम है (चित्र 3)

चित्र 2 **गतिशीलता से सर्वाधिक निर्धनों को सबसे अधिक लाभ प्राप्त होता है ....**
गंतव्य और मूल देश एचडीआई, 2000–2002

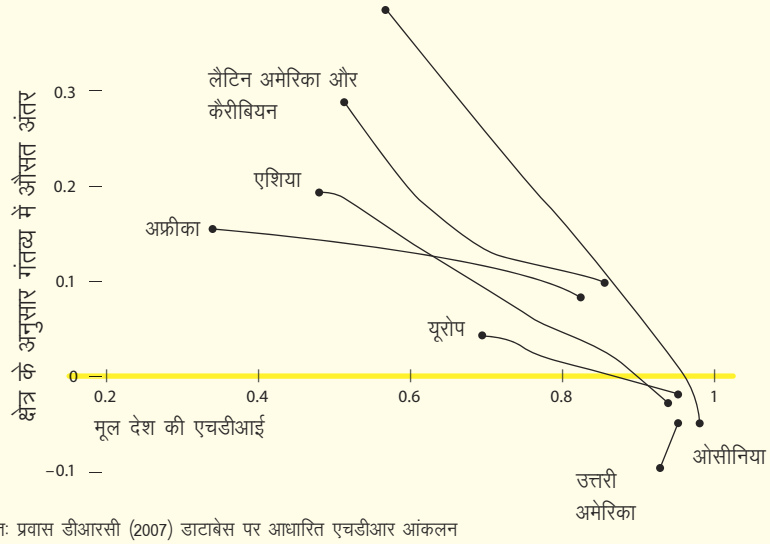

स्रोतः प्रवास डीआरसी (2007) डाटाबेस पर आधारित एचडीआर आंकलन
नोटः केरनल सघनता रिग्रेशन्स का उपयोग करते हुए आंकलन

चित्र 3 **... साथ ही वे कम गतिशील होते हैं**
एचडीआई और आय के हिसाब से आप्रवासन दर

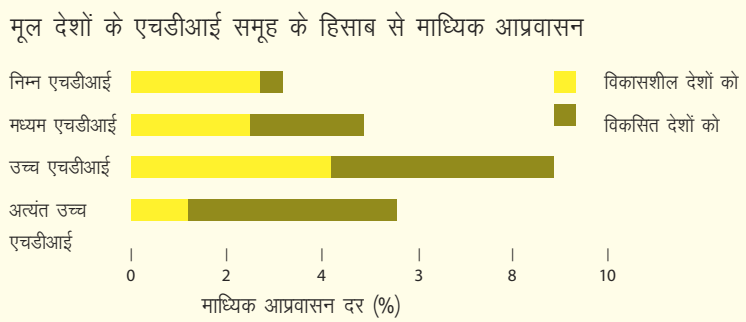

स्रोतः प्रवास डीआरसी (2007) और राष्ट्र संघ (2009) पर आधारित एचडीआर आकलन

सचलता में बाधाएं

विश्व की जनसंख्या में अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों का अंश पिछले 50 वर्षों से 3 प्रतिशत के आंकड़े पर उल्लेखनीय रूप से स्थिर रहा है, यह ऐसे कारकों के बावजूद है जिनसे जन प्रवाह को बढ़ाने की अपेक्षा थी। जनसांख्यिक रुझानों – विकसित देशों में वृद्ध होती जनसंख्या और विकासशील देशों में युवा और उभरती जनसंख्या – तथा बढ़ते हुए रोजगार के अवसरों ने अधिक सस्ते संचार और परिवहन के साथ मिलकर प्रवास की "मांग" को बढ़ा दिया है। किंतु, प्रवास करने के इच्छुक लोगों को सरकारों द्वारा आने–जाने पर लगाई गई बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। पिछली शताब्दी में, राष्ट्रीय राज्यों की संख्या चौगुनी होकर 200 हो गई है जिसके कारण सरहदों की संख्या बढ़ी है, जबकि नीतिगत परिवर्तनों ने व्यापार बाधाओं के कम होने के बावजूद प्रवास की सीमा को और सीमित कर दिया है।

कई समृद्ध देशों में श्रम की मांग के बढ़ने के बावजूद गतिशीलता की बाधाएं निम्न कौशल वाले लोगों के लिए ज्यादा कठिन है। नीतियां अक्सर बेहतर शिक्षित लोगों के प्रवेश के पक्ष में होती हैं। उदाहरण के लिए, छात्रों को शिक्षा पूरी करने के बाद ठहरने की अनुमति देना और पेशेवर लोगों को अपने परिवारों के

साथ आकर बसने के लिए आमंत्रित करना। पर सरकारों में उन निम्न कौशल वाले श्रमिकों के मामले में अधिक दुविधा है जिनके दर्जे और जिनके व्यवहार को लेकर काफी कुछ वांछित होता है। कई देशों में कृषि, निर्माण, विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में नौकरियों पर प्रवासियों की नियुक्त होती है। फिर भी सरकारें अक्सर कम शिक्षित लोगों को देश के अंदर–बाहर करती रहती हैं, और कभी–कभी अस्थायी व अनियमित मजदूरों के साथ बहते नल जैसा व्यवहार करती हैं जिसे जब चाहे बंद कर दिया, जब चाहे खोल दिया। आज अनुमानतः 5 करोड़ लोग अनियमित दर्जे (स्टेटस) के साथ विदेशों में रहते और कार्य करते हैं। थाईलैंड और अमेरिका जैसे कुछ देश बड़ी संख्या में अनधिकृत श्रमिकों को बर्दाश्त कर रहे हैं। इससे इन लोगों को अपने मूल देश से बेहतर भुगतान वाली नौकरियां तो मिल जाती हैं, पर हालांकि वे स्थानीय निवासियों जैसा कार्य करते हैं और समान करों का भुगतान करते हैं, फिर भी बुनियादी सेवाओं तक उनकी पहुंच नहीं होती और उनके सिर पर देश से निकाले जाने का खतरा मंडराता रहता है। इटली और स्पेन जैसी कुछ सरकारों ने इस बात को स्वीकार कर लिया है कि अकुशल प्रवासी उनके समाजों में योगदान करते हैं, और उनकी स्थिति को नियमित किया है, जबकि कनाडा और न्यूजीलैंड जैसे देशों ने कृषि जैसे क्षेत्रों के लिए मौसमी प्रवास कार्यक्रम तैयार किये हैं।

जहां गंतव्य देशों में कौशलयुक्त प्रवास के मूल्य को लेकर एक व्यापक सहमति मौजूद है, वहां निम्न कौशल वाले प्रवासी श्रमिक भारी विवाद का कारण बनते हैं। यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है जहां कि ये प्रवासी खाली नौकरियों को भरते हैं, वहीं ये स्थानीय मजदूरों को विस्थापित करते हैं और मजदूरियों को कम करते हैं। प्रवासियों के आप्रवाह से पैदा होने वाले अन्य सरोकारों में अपराध के जोखिम का बढ़ना, स्थानीय सेवाओं पर अतिरिक्त भार और सामाजिक एवं सांस्कृतिक संसक्ति को खोने का डर शामिल है। पर इन सरोकारों को अक्सर बढ़ाचढ़ा कर पेश किया जाता है। शोध से पता चलता है कि जहां कुछ परिस्थितियों में प्रवास का तुलनीय कौशलों वाले स्थानीय श्रमिकों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, वहां साक्ष्य यह सुझाते हैं कि ये प्रभाव सामान्यतः हल्के–फुल्के होते हैं और कुछ संदर्भों में पूरी बिल्कुल नजर नहीं आते।

गतिशीलता के पक्ष में तर्क

यह रिपोर्ट यह तर्क देती है कि प्रवासी स्थानीय लोगों की थोड़ी सी लागत पर या बिना लागत के आर्थिक परिणाम को बढ़ाते हैं। बेशक व्यापकतर सकारात्मक प्रभाव भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, बाल देखरेख के लिए प्रवासियों के उपलब्ध होने से स्थानीय माताएं घर से बाहर काम पर जा सकती हैं। जब प्रवासी आय के सोपान पर ऊपर चढ़ने के लिए आवश्यक भाषा और अन्य कौशल हासिल करते हैं तो उनमें से कई बिल्कुल स्वाभाविक रूप से घुलमिल जाते हैं जिससे घुलमिल न सकने वाले विदेशियों के बारे में भय – उसी तरह के भय जो 20 वीं शताब्दी के आरंभ में आयरलैंड के लोगों के बारे में अमेरिका में प्रकट किये गये हैं – आज नवागंतुकों के मामले में समान रूप से अनुचित प्रतीत होते हैं। तो भी, यह बात सच है कि कई प्रवासियों को व्यवस्था संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिसकी वजह से उनके लिए स्थानीय लोगों के समान स्थानीय सेवाएं प्राप्त करना कठिन या असंभव हो जाता है। ये समस्याएं अस्थायी और अनियमित श्रमिकों के लिए विशेष रूप से गंभीर होती है।

प्रवासियों के मूल देशों में सचलता के प्रभाव उच्चतर आयों और उपभोग, बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य के रूप में तथा व्यापकतर सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्तर पर महसूस किये जाते हैं। सचलता आम तौर पर सर्वाधिक प्रत्यक्ष रूप से तात्कालिक पारिवारिक सदस्यों को भेजे गए भुगतान के रूप में लाभ प्रदान करती है। इन भुगतानों को खर्च किया जाता है, इस तरह स्थानीय श्रमिकों को रोजगार मिलता है, तथा विदेशों से प्राप्त विचारों की प्रतिक्रिया के रूप में व्यवहार में परिवर्तन आता है। विशेष रूप से महिलाओं को पारंपरिक भूमिकाओं से मुक्ति मिल सकती है।

इन प्रभावों की प्रकृति और सीमा इस पर निर्भर करती है कि कौन विदेश गये, विदेश में उनकी स्थिति कैसी रही, और क्या वे धन, ज्ञान एवं विचारों के प्रभाव के माध्यम से अपनी जड़ों से जुड़े रहे। प्रवासी क्योंकि बड़ी संख्या में कुछ विशेष स्थानों – उदाहरण के लिए भारत में केरल और चीन में फुजियन प्रांत से आते हैं, इसलिए समुदाय स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव राष्ट्रीय प्रभावों से व्यापकतर हो सकते हैं। किंतु, लंबे समय के दौरान मानव सचलता से विचारों के प्रवाह का पूरे देश में सामाजिक मानदंडों और वर्ग संरचनाओं पर दूरगामी प्रभाव पड़ सकता है। कौशलों के बाहरी प्रवाह को कभी–कभी नकारात्मक रूप में देखा जाता है – विशेष कर शिक्षा या स्वास्थ्य जैसी सेवाओं की प्रदायगी के लिए। ऐसी स्थिति होने पर भी सर्वोत्तम प्रत्युत्तर निम्न वेतन, अपर्याप्त वित्तपोषण और कमजोर संस्थाओं जैसी मूल ढांचागत समस्याओं से निबटने वाली नीतियां हैं। कुशल श्रमिकों की क्षति का दोष स्वयं श्रमिकों के माथे मढ़ना अनुचित है और उनकी गतिशीलता के लिए बाधाएं खड़ी करने का उलटा असर हो सकता है – कहना न होगा कि ये बाधाएं अपने देश को छोड़ने के बुनियादी मानव अधिकार से वंचित करती हैं।

किंतु चाहे वह कितना ही सुप्रबंधित हो, अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन राष्ट्रीय मानव विकास रणनीति नहीं बन सकता। कुछ अपवादों को (मुख्यतः छोटे द्वीप राज्य जहां 40 प्रतिशत से अधिक निवासी विदेश जाते हैं), छोड़ दें तो आप्रवास (इमिग्रेशन) से किसी समूचे देश की विकास संभावनाओं का

सचलता या गतिशीलता पर लगी बाधाओं को कम करके और सचल लोगों के प्रति व्यवहार में सुधार लाकर मानव विकास के लिए बड़े लाभ हासिल किये जा सकते हैं।

निर्धारित होना संभव नहीं है। प्रवासन अधिक से अधिक एक ऐसा मार्ग है जो निर्धनता में कमी और मानव विकास में सुधार लाने के व्यापकतर स्थानीय और राष्ट्रीय प्रयासों को पूरित करता है।

इस रिपोर्ट को लिखते समय, विश्व आधी शताब्दी के सर्वाधिक गंभीर आर्थिक संकट से गुजर रहा है। सिकुड़ती अर्थव्यवस्थाएं और छंटनियां प्रवासियों सहित करोड़ों श्रमिकों को प्रभावित कर रही हैं। हमारा मानना है कि वर्तमान गिरावट का एक अवसर की तरह उपयोग करके प्रवासियों के लिए एक नया अनुबंध संस्थापित किया जाना चाहिए। एक ऐसा सौदा या अनुबंध जो संरक्षणवादी प्रतिक्रिया के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करते हुए घर और विदेश में श्रमिकों को लाभ प्रदान करे। संकट से उबरने के बाद अधिकतर वही रुझान – जो पिछली आधी शताब्दी में सचलता को चालित कर रहे थे – फिर से उभरेंगे और अधिकाधिक लोगों को सचल होने के लिए आकर्षित करेंगे। यह जरूरी है कि सरकारें इसके लिए आवश्यक उपाय करके रखें।

हमारा प्रस्ताव

सचलता या गतिशीलता पर लगी बाधाओं को कम करके और सचल लोगों के प्रति व्यवहार में सुधार लाकर मानव विकास के लिए बड़े लाभ हासिल किये जा सकते हैं। इस लाभों की प्राप्ति के लिए एक निर्भीक दूरदृष्टि की जरूरत है। यह रिपोर्ट ऐसे व्यापक सुधारों का समर्थन करती है जो प्रवासियों, समुदायों और देशों को प्रमुख लाभ प्रदान कर सकें।

हमारा प्रस्ताव गतिशीलता कार्यावली के दो ऐसे सर्वाधिक महत्वूपर्ण आयामों पर ध्यान देता है जो बेहतर नीतियों की संभावना प्रस्तुत करते हैं। ये दो पहलू हैं – प्रवेश और व्यवहार। हमारे प्रस्तावित मुख्य पैकेज में मध्यकालिक से लेकर दीर्घकालिक लाभ शामिल हैं (बाक्स 1)। ये न केवल गंतव्य देशों की सरकारों, बल्कि मूल देशों की सरकारों और अन्य कार्य पक्षों तथा स्वयं प्रवासियों से संबंधित हैं। नीति निर्माताओं को जहां सामान्य चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, वहीं उन्हें अपने–अपने देशों में राष्ट्रीय और स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न नीतियां तैयार करने और कार्यान्वित करने की जरूरत है। कार्य के कुछ अच्छे तौर–तरीके इनसे अलग हैं और उन्हें अधिक व्यापक रूप से अपनाया जा सकता है।

हम व्यक्तिगत रूप से अपनाये जाने के लिए सुधार की छह प्रमुख दिशाओं को रेखांकित कर रहे हैं, पर यदि इनका समाकलित पद्धति से एक साथ उपयोग किया जाएगा तो ये मानव विकास पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं। अधिक श्रमिकों के आप्रवास के लिए वर्तमान प्रवेश माध्यमों को खोलना, प्रवासियों के बुनियादी अधिकार सुनिश्चित करना, प्रवास की लागतों को कम करना, गंतव्य देश के समुदायों और वहां आने वाले प्रवासियों, दोनों को लाभ प्रदान करने वाले हल ढूंढना, लोगों द्वारा स्वयं अपने देशों के भीतर गतिशील होने की प्रक्रिया को आसान बनाना और प्रवास को राष्ट्रीय विकास रणनीतियों की मुख्य धारा में लाना, इन सभी पहलू मानव विकास में महत्वपूर्ण और पूरक योगदान करते हैं।

मुख्य पैकेज नियमित मौजूदा प्रवेश माध्यमों को खोलने के दो रास्तों पर बल देता हैः

- हम सचमुच मौसमी कार्य के लिए कृषि और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में योजनाओं का विस्तार करने की सिफारिश करते हैं। ऐसी योजनाएं विभिन्न देशों में पहले ही सफल हो चुकी हैं। उत्तम तौर–तरीके यह सुझाते हैं कि गंतव्य देश एवं मूल देश की सरकारों के साथ इस कार्य में यूनियनों और नियोक्ताओं और को शामिल किया जाना चाहिए – विशेषकर मूल वेतन गारंटियों, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा मानकों तथा अगली बार आने के लिए प्रावधानों को निर्धारित और कार्यान्वित करने में, जैसा कि उदाहरण के लिए न्यूजीलैंड के मामले में किया गया है।
- साथ ही हम स्थानीय मांग पर इसे की शर्तों के अनुकूल, निम्न कौशल वाले लोगों के वीसाओं की संख्या बढ़ाने का प्रस्ताव रखते हैं। अनुभव यह सुझाता है कि इसे करने के उत्तम तरीके इस प्रकार होंगे – आप्रवासियों को नियोक्ता बदलने का अधिकार सुनिश्चित करना, आप्रवासियों को अपने निवास काल को बढ़ाने हेतु आवेदन करने का अधिकार प्रदान करना और अंततः स्थायी आवास के तरीकों की रूपरेखा प्रस्तुत करना, वीसा की अवधि के दौरान वापसी की यात्राओं को सुगम बनाने वाले प्रावधान बनाना और जैसा कि स्वीडन के हाल के सुधार में अपनाया गया है, संचित सामाजिक सुरक्षा लाभों के स्थानांतरण की अनुमति देना।

गंतव्य देश को राजनीतिक प्रक्रिया के माध्यम से देश में प्रविष्ट होने वालों की वांछित संख्या पर निर्णय लेना चाहिए।

बॉक्स 1 **मुख पैकेज**

बाधाओं पर विजय के अंतर्गत सुधारों का एक मुख्य पैकेज प्रस्तुत किया गया है, जिसमें छः स्तम्भ शामिल हैं, हर स्तंभ अपने आप में लाभकारी है, पर एक साथ मिलकर भी सभी प्रवास के मानव विकास प्रभावों को अधिकतम करने का सर्वोत्तम अवसर प्रदान करते हैं:

1. उन नियमित माध्यमों को उदार और सरल बनाना जो कम कौशल वाले लोगों को विदेश में कार्य की अनुमति देते हैं;
2. प्रवासियों के बुनियादी अधिकारों को सुनिश्चित करना;
3. प्रवास संबंधी लागतों में कमी लाना;
4. प्रवासियों और गंतव्य देश में समुदायों के लिए परिणामों में सुधार लाना;
5. देश के भीतर गतिशीलता के लाभ संभव बनाना; और
6. गतिशीलता को राष्ट्रीय निवास रणनीतियों का अभिन्न अंग बनाना।

प्रवेश करने वालों की संख्या के निर्धारण के लिए पारदर्शी क्रियाविधियां आर्थिक स्थितियों के अनुसार कोटा (नियतांश) के साथ नियोक्ताओं की मांग आधारित होनी चाहिए।

गंतव्य स्थानों पर आप्रवासियों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है जो उनके बुनियादी मानव अधिकारों का उल्लंघन करता है। चाहे सरकारों ने प्रवासी श्रमिकों के संरक्षण संबंधी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों की पुष्टि न भी की हो, उन्हें कम से कम यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रवासियों को पूरे अधिकार प्राप्त हों – जैसे कि समान कार्य के लिए समान वेतन, अच्छी कार्य स्थितियां और सामूहिक संगठन। उन्हें भेदभाव दूर करने के लिए शीघ्र कार्रवाई करने की जरूरत है। मूल देश और गंतव्य देश की सरकारें मिलकर विदशों में अर्जित विश्वसनीयताओं की मान्यता के कार्य को आसान बना सकती हैं।

वर्तमान मंदी ने प्रवासियों को विशेष रूप से असुरक्षित बना दिया है। कुछ गंतव्य देशों की सरकारों ने प्रवासन कानूनों को इस प्रकार से कठोर बनाया है कि उनसे प्रवासियों के अधिकारों का उल्लंघन हो सकता है। छंटनी की वजह से काम से निकाले गये प्रवासियों को दूसरा नियोक्ता ढूंढने का अवसर देना (या जाने से पहले अपना कामकाज समेटने का समय देना), रोजगार संबंधी स्रोतों को विज्ञापित करना (कम से कम मूल देश में) – ये कुछ ऐसे उपाय हैं जो वर्तमान और संभावित प्रवासियों के लिए मंदी की असमानुपातिक लागत को कम कर सकते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सचलता के मामले में राष्ट्रीय सीमाओं को पार करने के लिए आवश्यक कागजात प्राप्त करने और प्रशासनिक जरूरतों को पूरा करने की लागतें अक्सर काफी होती हैं, ये प्रतिगामी हो सकती हैं (अकुशल लोगों और अल्पकालिक अनुबंध वाले लोगों के लिए आनुपातिक रूप से उच्चतर) और इनके अवांछित प्रभाव से अनियमित सचलता और तस्करी को प्रोत्साहन मिल सकता है। दस देशों में से एक देश में पासपोर्ट की लागत प्रति व्यक्ति आय के 10 प्रतिशत से अधिक है, इसमें आश्चर्य नहीं कि इन लागतों नकारात्मक रूप से आप्रवास दरों से जोड़ा जाता है। मूल देश और गंतव्य देश कार्य–प्रक्रियाओं को सरल बना कर दस्तावेज की लागत को कम कर सकते हैं और दोनों पक्ष मध्यस्थता सेवाओं को सुधार करने और उन्हें विनियमित करने के लिए मिल कर कार्य कर सकते हैं।

जहां सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि प्रवासी पहुंचने के बाद भली–भांति व्यवस्थित हो जाएं, वहां यह भी महत्वपूर्ण है कि जिन समुदायों में वे शामिल होने जा रहे हैं वे मुख्य सेवाओं की अतिरिक्त मांग की वजह से उन्हें अनुचित बोझ न समझें। जहां यह स्थानीय अधिकारियों के लिए चुनौती प्रस्तुत करता है, वहां अतिरिक्त वित्तीय हस्तांतरणों की जरूरत होगी। प्रवासी बच्चों को शिक्षा के समान अवसर और जरूरत पड़ने पर दूसरों की शैक्षिक बराबरी के स्तर तक पहुंचने और घुलने–मिलने के लिए सहायता प्रदान करने से उनकी भविष्य की संभावनाओं में सुधार होगा। कुछ स्थितियों में भेदभाव का मुकाबला करने, सामाजिक तनावों से निबटने और जहां प्रासंगिक हो वहां आप्रवासियों के खिलाफ हिंसा की वारदातों को रोकने के लिए, अन्य स्थितियों की तुलना में अधिक सक्रिय प्रयासों की जरूरत होगी। नागरिक समाज और सरकारों को जागरूकता–निर्माण अभियानों के माध्यम से भेदभाव से निबटने का व्यापक सकारात्मक अनुभव है।

विश्व की अधिकतर केंद्रीय रूप से नियोजित व्यवस्थाओं के पतन के बावजूद आश्यर्चजनक तादाद में सरकारें – लगभग एक–तिहाई – आंतरिक सचलता की बाधाओं को वस्तुतः बनाये हुए हैं (तालिका 1)। आमतौर प्रतिबंध पर उन लोगों के लिए जो स्थानीय क्षेत्र में पंजीकृत नहीं हैं, निम्न बुनियादी सेवा प्रावधानों और हकदारियों का रूप लेते हैं, और इस तरह आंतरिक प्रवासियों के विरूद्ध भेदभाव करते हैं जैसा कि अभी भी चीन में होता है। आंतरिक प्रवासियों के संबंध में रिपोर्ट की मुख्य सिफारिश बुनियादी सेवा प्रावधान की साम्यता सुनिश्चित करना है। अस्थायी और मौसमी श्रमिक तथा उनके परिवार जहां जाते हैं, वहां उनके प्रति समान व्यवहार जरूरी है और साथ ही वापस उनके घरेलू क्षेत्र में अच्छे सेवा प्रावधान होने भी जरूरी हैं ताकि वे विद्यालय की सुविधा और स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करने के लिए वहां से जाने को मजबूर न हों।

तालिका 1 **एक–तिहाई देश सचलता के अधिकार को महत्वपूर्ण रूप से बाधित करते हैं**
एचडीआई वर्ग के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय सचलता और आप्रवासन पर रोकें

एचडीआई वर्ग	गतिशीलता पर रोकें, 2008					
	सर्वाधिक बाधित	1	2	3	सबसे कम बाधित	कुल
अत्यंत उच्च एचडीआई						
देश	0	3	1	3	31	38
प्रतिशत (%)	0	8	3	8	81	100
उच्च एचडीआई						
देश	2	4	4	10	27	47
प्रतिशत (%)	4	9	9	21	57	100
मध्यम एचडीआई						
देश	2	13	24	27	16	82
प्रतिशत (%)	2	16	29	33	20	100
निम्न एचडीआई						
देश	2	5	13	5	0	25
प्रतिशत (%)	8	20	52	20	0	100
कुल						
देश	6	25	42	45	74	192
प्रतिशत (%)	3	13	22	23	39	100

स्रोतः फ्रीडम हाउस (2009)

जो परिवार, विशेषकर विकासशील देशों में अपनी आजीविकाओं में विविधता और सुधार लाना चाहते हैं, उनके लिए प्रवास एक महत्वपूर्ण रणनीति हो सकता है, पर यह व्यापकतर विकास प्रयासों की जगह नहीं ले सकता

जो परिवार, विशेषकर विकासशील देशों में अपनी आजीविकाओं में विविधता और सुधार लाना चाहते हैं, उनके लिए प्रवास एक महत्वपूर्ण रणनीति हो सकता है, पर यह व्यापकतर विकास प्रयासों की जगह नहीं ले सकता। सरकारों को इस संभावना को समझना होगा और प्रवास को राष्ट्रीय विकास नीति के अन्य पहलुओं से जोड़ना होगा। अनुभव से जो एक महत्वपूर्ण बिंदु उभर कर आता है वह यह है कि गतिशीलता के व्यापकतर लाभ हासिल करने के लिए राष्ट्रीय आर्थिक स्थितियां और मजबूत सार्वजनिक–निजी संस्थाएं महत्वपूर्ण हैं।

आगे का रास्ता

इस कार्यावली को आगे बढ़ाने के लिए आम लोगों के साथ संलग्न होने और प्रवास संबंधी तथ्यों के बारे में उनकी जागरूकता को बढ़ाने के अधिक ठोस प्रयासों के साथ मजबूत और प्रबुद्ध नेतृत्व की जरूरत होगी।

मूल देशों द्वारा प्रवास पर और उसके लाभों, लागतों और जोखिमों पर अधिक व्यवस्थित ढंग से विचार करने से गतिशीलता को राष्ट्रीय विकास रणनीतियों से जोड़ने का बेहतर आधार प्राप्त होगा। आप्रवास घरेलू देश में विकास प्रयासों में तेजी लाने का विकल्प नहीं है, पर यह विचारों, ज्ञान और संसाधनों तक पहुंच को सुगम बना सकता है, तथा कुछ मामलों में प्रगति में तेजी ला सकता है।

गंतव्य देशों के लिए सुधारों का "कैसे और कब" जनमत तथा स्थानीय और राष्ट्रीय स्तरों पर राजनीतिक बाधाओं को ध्यान में रखते हुए आर्थिक और सामाजिक स्थितियों पर वास्तविकतापूर्ण तरीके से विचार करने पर निर्भर करेगा।

विशेषकर द्विपक्षीय और क्षेत्रीय समझौतों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का परिणाम बेहतर प्रवास प्रबंधन, प्रवासियों के अधिकारों की बेहतर सुरक्षा और मूल देश एवं गंतव्य देश के लिए प्रवासियों के बढा हुआ योगदान हो सकता है। कुछ क्षेत्र अधिक खुले व्यापार को प्रोन्नत करने के लिए मुक्त–गतिविधि जोन बना रहे हैं – जैसे कि पश्चिमी अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में दक्षिणी कोन। इन देशों में विस्तारित श्रम बाजार प्रवासियों, उनके परिवारों और समुदायों को पर्याप्त लाभ पहुंचा सकते हैं।

प्रवासन के प्रबंधन में सुधार के लिए एक नई भूमंडलीय व्यवस्था का निर्माण करने की मांग भी की जा रही हैः 150 से अधिक देश अब भूमंडलीय प्रवास एवं विकास फोरम में भाग लेते हैं। समान चुनौतियों का सामना करते हुए सरकारें समान प्रत्युत्तर तैयार करती हैं – यह एक ऐसा रुझान है जो हमने इस रिपोर्ट को तैयार करते समय देखा है।

बाधाओं पर विजय शीर्षक यह दस्तावेज मानव विकास को दृढ़ता के साथ उन नीति निर्माताओं की कार्यसूची में रखता है जो विश्वव्यापी मानव सचलता के जटिल होते ढांचे से सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करना चाहते हैं।

मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) 2007
परिणाम और रूझान

मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) किसी भी देश के मानव विकास का एक संक्षिप्त मापन है। यह निम्न तीन आधारभूत आयामों की दृष्टि से किसी देश की औसत उपलब्धियों का मापन करता है:

- जन्म के समय जीवन क्षमता के आधार पर दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन
- प्रौढ़ साक्षरता दर और मिश्रित सकल नामांकन अनुपात के आधार पर, ज्ञान तक पहुंच; और
- अमरीकी डालर में क्रय शक्ति साम्यता में प्रति व्यक्ति जीडीपी के अनुसार मापित शालीन जीवन स्तर।

इन तीनों आयामों को 0 और 1 के बीच के मूल्यों में मानकीकृत किया जाता है और 0–1 के बीच कुल एचडीआई मूल्य पर पहुंचने के लिए सरल औसत को लिया जाता है। इसके बाद देशों का श्रेणी–1 को उच्चतम एचडीआई मूल्य बनाते हुए इस मूल्य के आधार पर श्रेणीकरण किया जाता है।

इस वर्ष एचडीआई का – 2007 के आंकड़ों के उपयोग करते हुए 182 देशों के लिए आकलन किया गया है। तीन नये देश जोड़े गए हैं – अंडोरा और लिचटेनस्टीन को पहली बार और अफगानिस्तान को 1996 के बाद पहली बार। रिपोर्ट में प्रस्तुत परिणामों में नये आंकड़ों और पिछली श्रृंखला के संशोधनों पर विचार किया गया है।

इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि 2007 के आंकड़ों पर आधारित ये एचडीआई परिणाम भूमंडलीय आर्थिक संकट के प्रभावों को प्रतिबिंबित *नहीं* करते, जिसका विश्व के कई देशों की मानव विकास उपलब्धियों पर जबर्दस्त प्रभाव पड़ सकता है।

तालिका में दिये गये तीर के निशान सतत समय श्रृंखला डाटा के आधार पर 2006 और 2007 के बीच श्रेणियों में परिवर्तन का संकेत देते हैं। इस अवधि के दौरान एचडीआई मूल्यों में चार देशों में – सभी मामलों में गिरती हुई प्रति व्यक्ति जीडीपी के फलस्वरूप गिरावट आई है तथा 174 में वृद्धि हुई है। इसी के साथ देशों की श्रेणियों में कई अन्य परिवर्तन हुए हैं। 2007 में, 2006 की तुलना में, इन दो वर्षों के बीच 50 देशों की श्रेणी में एक या अधिक स्थानों की गिरावट आई है तथा इतने ही देशों की श्रेणियां बढ़ी हैं। इसका कारण यह है कि श्रेणी में परिवर्तन व्यक्तिगत देश के कार्य–प्रदर्शन से ही प्रभावित नहीं होते, बल्कि अन्य देशों की तुलना में की गई प्रगति से भी प्रभावित होते हैं, खास कर तब जब मूल्य के अंतर कम हों। चीन की श्रेणी सबसे अधिक बढ़ी है (सात स्थान), इसके बाद कोलंबिया और पेरू (पांच स्थान) की श्रेणी की बढ़त सबसे अधिक रही है। इन सभी देशों में इसका संबंध सापेक्ष रूप से तीव्र आय संवृद्धि से जोड़ा जा सकता है।

सूची में सबसे ऊपर नार्वे है, आस्ट्रलिया दूसरे तथा आइसलैंड तीसरे स्थान पर हैं – सबसे हाल के डाटा के अनुसार पिछले वर्ष वाली श्रेणियां। शीर्ष 10 की श्रेणी में कुछ परिवर्तन हुए हैं। इनमें फ्रांस नया देश है जिसने लग्जमबर्ग का स्थान लिया है। सूचकांक के दूसरे छोर पर नाइजर, अफगानिस्थान और सियेरा लोन अंतिम तीन स्थानों पर हैं और 2006 और 2007 के बीच उनकी श्रेणी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

अधिकतर देशों ने अधिक से अधिक दो स्थानों की बढ़त हासिल नहीं की है। उदाहरण के लिए उप–सहारन अफ्रीका, घाना ने दो स्थानों की बढ़त पाई है (शैक्षिक उपलब्धियों के कारण) वहीं चाड, मारीशस और स्वीजीलैंड की श्रेणी में दो स्थानों की गिरावट आई है।

एचडीआई 2007

2007 एचडीआई श्रेणीकरण और मूल्य और 2006–2007 श्रेणी परिवर्तन

टिप्पणी ↑ 2006 और 2007 के बीच एचडीआई श्रेणीकरण में श्रेणी संख्या के हिसाब से सुधार
↓ 2006 और 2007 के बीच एचडीआई श्रेणीकरण में श्रेणी संख्या के हिसाब से गिरावट
खाली का मतलब है 2006 और 2007 के बीच कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

अत्यंत उच्च मानव विकास (एचडीआई≥ 0.900)		
नॉर्वे	0.971	**1**
आस्ट्रेलिया	0.970	**2**
आइसलैंड	0.969	**3**
कनाडा	0.966	**4**
आयरलैंड	0.965	**5**
नीदरलैंड्स	0.964	**6** ↑1
स्वीडन	0.963	**7** ↓1
फ्रांस	0.961	**8** ↑3
स्विटजरलैंड	0.960	**9**
जापान	0.960	**10**
लक्समवर्ग	0.960	**11** ↓3
फिनलैंड	0.959	**12** ↑1
यूनाइटेड स्टेट्स	0.956	**13** ↓1
ऑस्ट्रिया	0.955	**14** ↑2
स्पेन	0.955	**15**
डेनमार्क	0.955	**16** ↓2
बेलजियम	0.953	**17**
इटली	0.951	**18** ↑1
लिचटेन्स्टीन	0.951	**19** ↓1
न्यूजीलैंड	0.950	**20**
यूनाइटेड किंगडम	0.947	**21**
जर्मनी	0.947	**22**
सिंगापुर	0.944	**23** ↑1
हांगकांग, चाइना (एसएआर)	0.944	**24** ↓1
ग्रीस	0.942	**25**
कोरिया (गणतंत्र)	0.937	**26**
इजराइल	0.935	**27** ↑1
अंडोरा	0.934	**28** ↓1
स्लोवेनिया	0.929	**29**
ब्रुनई दरूसलम	0.920	**30**
कुवैत	0.916	**31**
साइप्रस	0.914	**32**
कतर	0.910	**33** ↑1
पुर्तगाल	0.909	**34** ↓1
युनाइटेड अरब अमीरात	0.903	**35** ↑2
चेक गणतंत्र	0.903	**36**
बारबाडोस	0.903	**37** ↑2
मालटा	0.902	**38** ↓3
उच्च मानव विकास (0.900 > एचडीआई ≥ 0.800)		
बहरीन	0.895	**39** ↓1
एस्तोनिया	0.883	**40**
पोलैंड	0.880	**41** ↑1
स्लोवाकिया	0.880	**42** ↑2
हंगरी	0.879	**43** ↓2
चिली	0.878	**44** ↓1
क्रोशिया	0.871	**45**
लिथुआनिया	0.870	**46**
एंटीगुआ एंड बारबूडा	0.868	**47** ↑1
लातविया	0.866	**48** ↑2
अर्जेंटीना	0.866	**49** ↓2
उरुग्वे	0.865	**50** ↓1
क्यूबा	0.863	**51**
बहामास	0.856	**52**
मैक्सिको	0.854	**53** ↑1
कोस्टा रिका	0.854	**54** ↓1
लिबयन अरब जम्हारिया	0.847	**55** ↑1
ओमान	0.846	**56** ↓1
सेचेलस	0.845	**57**
वेनेजुएला (वोलिवियन गणतंत्र)	0.844	**58** ↑4
सऊदी अरेबिया	0.843	**59** ↓1
पनामा	0.840	**60** ↑1
बुलगारिया	0.840	**61** ↓2
सेंट किट्स और नेविस	0.838	**62** ↓2
रोमानिया	0.837	**63** ↑1
ट्रिनिडाड एंड टोबैगो	0.837	**64** ↓1
मोंटेनेग्रो	0.834	**65**
मलेशिया	0.829	**66**
सर्बिया	0.826	**67**
बेलोरूस	0.826	**68** ↑1
सेंट लूसिया	0.821	**69** ↓1
अल्बानिया	0.818	**70**
रूसी फेडरेशन	0.817	**71** ↑2
मेसेडोनिया (पूर्व यूगोस्लाव गण.)	0.817	**72**
डोमिनिका	0.814	**73** ↓2
ग्रेनाडा	0.813	**74**
ब्राजील	0.813	**75**
बोस्निया एंड हरर्जेगोविना	0.812	**76**
कोलोम्बिया	0.807	**77** ↑5
पेरू	0.806	**78** ↑5
तुर्की	0.806	**79** ↓1
इक्वेडोर	0.806	**80** ↓3
मारिशस	0.804	**81** ↓2
कजाकस्तान	0.804	**82** ↓1
लेबनान	0.803	**83** ↓3
मध्यम मानव विकास (0.800 > एचडीआई ≥ 0.500)		
आर्मीनिया	0.798	**84** ↑1
यूक्रेन	0.796	**85** ↓1
अजरबाइजान	0.787	**86** ↑2
थाइलैंड	0.783	**87** ↓1
ईरान (इस्लामिक गणतंत्र)	0.782	**88** ↓1
जॉर्जिया	0.778	**89** ↑2
डोमिनिकन गणतंत्र	0.777	**90** ↓1
सेंटविनसेंट और ग्रेनाडाइंस	0.772	**91** ↑2
चीन	0.772	**92** ↑7
बेलिज़े	0.772	**93** ↓3
समोआ	0.771	**94** ↑2
मालदीवस्	0.771	**95** ↑2
जोर्डन	0.770	**96** ↓1
सुरीनाम	0.769	**97** ↑1
ट्यूनीशिया	0.768	**98** ↑2
टोंगा	0.768	**99** ↓5
जमाइका	0.766	**100** ↓8
पैराग्वै	0.761	**101**
श्रीलंका	0.759	**102**
गैबोन	0.755	**103**
अल्जीरिया	0.754	**104**
फिलिपीन्स	0.751	**105**
एल सल्वाडोर	0.747	**106**
सीरियन अरब गणतंत्र	0.742	**107** ↑2
फिजी	0.741	**108** ↓1
तुर्कमेनिस्तान	0.739	**109** ↓1
अधिकृत फिलिस्तीनी क्षेत्र	0.737	**110**
इंडोनेशिया	0.734	**111**
होंडूरास	0.732	**112**
बोलिविया	0.729	**113**
गुयाना	0.729	**114**
मंगोलिया	0.727	**115** ↑1
वियतनाम	0.725	**116** ↓1
माल्दोवा	0.720	**117**
इक्वेटोरियल गिनिया	0.719	**118**
उजबेकिस्तान	0.710	**119**
किरगिस्तान	0.710	**120**
केप वर्डे	0.708	**121**
ग्वोटेमाला	0.704	**122** ↑1
इजिप्ट	0.703	**123** ↓1
निकारागुवा	0.699	**124**
बोत्सवाना	0.694	**125** ↑1
वनुवातू	0.693	**126** ↓1
ताजिकिस्तान	0.688	**127**
नामीबिया	0.686	**128** ↑1
दक्षिण अफ्रीका	0.683	**129** ↓1
मोरक्को	0.654	**130**
साओ तोम और प्रिंसीपे	0.651	**131**
भूटान	0.619	**132** ↑1
लाओ लोकजनतांत्रिक गणतंत्र	0.619	**133** ↓1
भारत	0.612	**134**
सोलोमन द्वीप समूह	0.610	**135**
कांगो	0.601	**136**
कंबोडिया	0.593	**137**
म्यानमार	0.586	**138**
कोमोरोस	0.576	**139**
यमन	0.575	**140** ↑1
पाकिस्तान	0.572	**141** ↑1
स्वाजीलैंड	0.572	**142** ↓2
अंगोला	0.564	**143**
नेपाल	0.553	**144**
मेडागास्कर	0.543	**145**
बांग्लादेश	0.543	**146** ↑2
केन्या	0.541	**147**
पपुआ न्यू गिनिया	0.541	**148** ↓2
हैती	0.532	**149**
सूडान	0.531	**150**
तंजानिया (संयुक्त गणतंत्र)	0.530	**151**
घाना	0.526	**152** ↑2
कैमेरून	0.523	**153** ↓1
मोरिटानिया	0.520	**154** ↓1
जबूती	0.520	**155**
लेसोथो	0.514	**156**
युगांडा	0.514	**157** ↑1
नाइजीरिया	0.511	**158** ↓1
निम्न मानव विकास (एचडीआई < 0.500)		
टोगो	0.499	**159**
मलावी	0.493	**160** ↑1
बेनिन	0.492	**161** ↓1
तिमोर–लेस्ते	0.489	**162**
कोटे द आइवोरी	0.484	**163**
जांबिया	0.481	**164**
एरिट्रिया	0.472	**165**
सेनेगल	0.464	**166**
रवांडा	0.460	**167**
गांबिया	0.456	**168**
लाइबेरिया	0.442	**169**
गिनिया	0.435	**170**
इथिओपिया	0.414	**171**
मोजांबीक	0.402	**172**
गिनिया–बिसाऊ	0.396	**173** ↑1
बुरुंडी	0.394	**174** ↑1
चाड	0.392	**175** ↓2
कांगो (जनतांत्रिक गणतंत्र)	0.389	**176** ↑1
बुरकीना फासो	0.389	**177** ↓1
माली	0.371	**178** ↑1
मध्य अफ्रीकी जनतंत्र	0.369	**179** ↓1
साइरा लियोन	0.365	**180**
अफगानिस्तान	0.352	**181**
नाइजर	0.340	**182**

भूमंडलीय मानव विकास रिपोर्ट 2009

इस रिपोर्ट से संबंधित संसाधन अन्य भाषाओं में http://hdr.undp.org में उपलब्ध है जिनमें रिपोर्ट के सारांशों की पूर्ण प्रतियां, परामर्शों, संगोष्ठियों और नेटवर्क परिचर्चाओं के सारांश, मानव विकास शोध आलेख श्रृंखला, और प्रैस सामग्री शामिल है। सभी सांख्यिकीय संकेतक, डाटा टूल्स, मानचित्र, देश तथ्य तालिकाएं और अन्य सामग्री निःशुल्क उपलब्ध हैं।

राष्ट्रीय, उप–राष्ट्रीय और क्षेत्रीय मानव विकास रिपोर्टें

पहली मानव विकास रिपोर्ट 1992 में जारी की गई थी और उसके बाद देश टीमों ने यूएनडीपी की सहायता से 130 देशों में 630 राष्ट्रीय और उप–राष्ट्रीय मानव विकास रिपोर्टें, साथ ही 35 क्षेत्रीय रिपोर्टें तैयार की हैं। एक नीतिगत एडवोकेसी दस्तावेज के रूप में, ये रिपोर्टें मानव विकास की अवधारणा को परामर्श, शोध और लेखन की देश–चालित और देश–स्वामित्व वाली प्रक्रियाओं के माध्यम से राष्ट्रीय संवादों में शामिल करती हैं। डाटा अथवा आंकड़ों को लिंग, प्रजातीय समूह, ग्रामीण/शहरी आधार पर विभाजित किया जाता है ताकि असमानता की पहचान की जा सके, प्रगति का आकलन किया जा सके और संभावित टकराव के चेतावनी संकेत जारी किये जा सकें। ये रिपोर्टें क्योंकि राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यों पर आधारित हैं, इसलिए वे सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों और अन्य मानव विकास प्राथमिकताओं की नीतियों सहित राष्ट्रीय रणनीतियों को प्रभावित कर सकती हैं।

सभी रिपोर्टों की प्रतियों, मापन प्राइमर, प्रशिक्षण सामग्री और अन्य सामग्री के संबंध में अधिक जानकारी के लिए देखें http://hdr.undp.org/in/hdr
यह रिपोर्ट अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध है।

मानव विकास और क्षमताओं पर पत्रिका

यह जन केंद्रित विकास के लिए एक बहुविषयी पत्रिका है। यह पत्रिका यूएनडीपी मानव विकास रिपोर्ट कार्यालय और मानव विकास एवं क्षमता एसोसिएशन का प्रकाशन है। यह नीति–निर्माताओं, अर्थशास्त्रियों, अकादमिक क्षेत्र के लोगों के बीच खुले वैचारिक आदान–प्रदान के लिए एक मंच प्रदान करता है। मानव विकास एवं क्षमता पत्रिका एक साथी–समीक्षित पत्रिका (पीयर रिव्यूड जर्नल) है जिसे टेलर एंव फ्रेंसिस ग्रुप लिमिटेड के एक इंप्रिंट राउटलेज जर्नल्स द्वारा वर्ष में तीन बार (मार्च, जुलाई और नवंबर) में प्रकाशित किया जाता है।

सब्सक्राइब करने के लिए, कृपया http://www.tandf.co.uk/journals से संपर्क करें।

मानव विकास रिपोर्ट के विषय

2007/2008 मौसम परिवर्तन से संघर्ष : विभाजित विश्व में मानव एकजुटता
2006 कमी से परे : सत्ता, निर्धनता और भूमंडलीय जल संकट
2005 अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एक चौराहे पर : अविभाजित विश्व में सहायता, व्यापार और सुरक्षा
2004 आज की विविधतापूर्ण दुनिया में सांस्कृतिक आजादी
2003 सहस्राब्दी विकास लक्ष्य : मानव निर्धनता को समाप्त करने के लिए राष्ट्रों के बीच समझौता
2002 बंटी हुई दुनिया में जनतंत्र को गहन बनाना
2001 कई प्रौद्योगिकी को मानव विकास के हित में लगाना
2000 मानव अधिकार और मानव बनाएं
1999 मानवीय चेहरे के साथ भूमंडलीकरण
1998 मानव विकास के लिए उपयोग
1997 निर्धनता–उन्मूलन के लिए मानव विकास
1996 आर्थिक संवृद्धि और मानव विकास
1995 जेंडर और मानव विकास
1994 मानव सुरक्षा के नये आयाम
1993 जन भागीदारी
1992 मानव विकास के भूमंडलीय आयाम
1991 मानव विकास का वित्तपोषण
1990 मानव विकास की अवधारणा और मापन

HDR website:http://hdr.undp.org

मानव विकास रिपोर्ट, 2009 का सारांश

हमारा विश्व अत्यंत असमान है। विश्व के अनेक लोगों के लिए अपने नगर या गांव से दूर जाना ही अपने जीवन–स्तरों में सुधार लाने का सर्वोत्तम और कभी–कभी तो एकमात्र विकल्प होता है। प्रवासन व्यक्ति और अनेक परिवार की आय, शिक्षा और सहभागिता में सुधार लाने, बच्चों के भविष्य की संभावनाओं को बढ़ाने की दृष्टि से अत्यंत प्रभावकारी हो सकता है। पर इसका मूल्य इससे कहीं अधिक हैं – आप कहां रहना चाहते हैं यह निर्णय लेने का अधिकार मानव स्वतंत्रता का मुख्य तत्व है।

विश्व में प्रवासियों का कोई एक जैसा स्वरूप नहीं है। फल एकत्र करने वाले श्रमिक, नर्सें, राजनीतिक शरणार्थी, निर्माण मजदूर, अकादमिक लोग, कंप्यूटर प्रोग्रामर – ये सभी उन एक अरब लोगों का हिस्सा हैं जो अपने देश के भीतर दूसरे स्थानों पर और देश से बाहर प्रवास करते हैं। जब वे बाहर जाते हैं, चाहे वे देश के भीतर जाएं या अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के आरपार जाएं, तब वे आशा और अनिश्चितता की एक यात्रा पर निकलते हैं। अधिकतर लोग बेहतर अवसरों की तलाश में बाहर जाते हैं, इस आशा के साथ कि ही वे उस गंतव्य देश में अपनी प्रतिभाओं को संसाधनों से मिला कर अपने और अपने परिवारों को लाभान्वित कर सकेंगे। मूल देश और गंतव्य देश में स्थानीय समुदाय और समाज इससे लाभान्वित होते हैं। इन लोगों की विविधता और उनकी गतिशीलता को अभिशासित करने वाले नियम मानव गतिशीलता को, खासकर भूमंडलीय मंदी के बीच, विश्व के सर्वाधिक जटिल मुद्दों में से एक बना देते हैं।

"बाधाओं पर विजयः मानव गतिशीलता और विकास" में यह छानबीन की गई है कि किस तरह गतिशीलता संबंधी बेहतर नीतियां मानव विकास को आगे बढ़ा सकती हैं। सबसे पहले इसमें मानव गतिशीलता के स्वरूप पर विचार किया गया है यानी कि कौन, कहां, कब और क्यों जाता है। साथ ही इसमें प्रवासियों और उनके परिवारों पर तथा मूल और गंतव्य स्थानों पर इसके प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। इसमें सरकारों को अपनी सीमाओं के भीतर और आरपार गतिशीलता पर बाधाओं को कम करने के सलाह दी गई है ताकि मानव विकल्पों और स्वतंत्रताओं का विस्तार किया जा सके। साथ ही इसमें ऐसे व्यावहारिक उपाय उठाने पर बल दिया गया है जो गंतव्य देश में पहुंचने पर प्रवासी के भावी जीवन की संभावनाओं में सुधार लाएं। इससे गंतव्य स्थान और मूल स्थानों के समुदायों को लाभ प्राप्त होगा। सुधार न केवल गंतव्य देशों की सरकारों, बल्कि मूल देशों की सरकारों, अन्य मुख्य पक्षों, विशेषकर निजी क्षेत्र, यूनियनों, गैर–सरकारी संस्थाओं और खुद प्रवासियों के संदर्भ में भी जरूरी हैं।

वर्ष 2009 की मानव विकास रिपोर्ट मानव विकास को उन नीति निर्माताओं की कार्यावली में दृढ़ता से रखती है जो विश्वव्यापी मानव गतिशीलता के अधिकाधिक जटिल होते ढांचों से सर्वोत्तम परिणाम चाहते हैं।